स्त्रियों की 8 मार्च कमेटी की ओर से जारी

ईरान में स्त्री दमन का विरोध करो

(प्रस्तुत लेख ईरानी स्त्रियों की 8 मार्च कमेटी द्वारा ईरानी राष्ट्रपति खटामी की यूरोपीय देशों की यात्रा के विरुद्ध जारी किए गये वक्तव्य का सम्पादित अंश है। यह वक्तव्य 8 मार्च 1999 को जारी हुआ था। सम्पादक)

ईरान का इस्लामी गणतंत्र एक फासीवादी, जनविरोधी, स्त्रियों से नफरत करने वाली व निर्दयी शासन व्यवस्था है और दुनिया की तमाम जनता को इसका विरोध करना चाहिए। यूरोपीय शक्तियां खटामी को अपने यहाँ इसलिए बुला रही हैं क्योंकि ईरान के इस्लामी गणतंत्र के समर्थन में उनका निहित स्वार्थ है। अपनी स्थापना के समय से ही मौजूदा सरकार ने पश्चिम की विश्व पूंजीवादी ताकतों को ईरान में अपनी प्रत्यक्ष और प्रच्छन्न कार्रवाइयों के जरिये हर साल करोड़ों डालर का मुनाफा लूटने की उदारतापूर्वक इजाजत दी है। और अब तेल के एक ऐसे धनी देश के मुखिया के रूप में, जिसकी जनता गरीबी में आकंठ डूबी हुई है. खटामी यूरोपीय तेल कम्पनियों के साथ पेट्रोल की आखिरी बूंद तक का सौदा पटाने और बदले में यूरोपीय देशों से अपने फासीवादी शासन के लिए राजनीतिक समर्थन हासिल करने के उद्देश्य से इन देशों का दौरा कर रहे हैं। वे वहां इसलिए जा रहे हैं कि इन पूंजीपतियों से, मिट्टी के मोल ईरानी श्रम के शोषण का अवसर मुहैया कराने का वायदा कर सकें। वे वहां खरीददारी करने भी आ रहे हैं– हथियारों की खरीददारी करने निगरानी रखने वाले व जनसंख्या नियंत्रण के सर्वाधिक उन्नत उपकरण की खरीददारी करने आ रहे है ताकि ईरानी जनता को और भी कुशलता के साथ दबाया– कुचला जा सके। इरानी इस्लामी गणतंत्र के ये डायनासोर राजनीतिक दमन के मध्यकालीन तरीकों के साथ-साथ पश्चिमी पूंजीवादी देशों द्वारा ईजाद किये और गढ़े गये सर्वाधिक उन्नत तरीकों के इस्तेमाल में बहुत दक्ष हैं। ईरानी सरकार से मेल मिलाप करके इन पूंजीवादी देशों के शासक वर्ग का आर्थिक व राजनीतिक हित तो सधता ही है। परन्तु उन्नत देशों के बुनियादी मेहनतकशों, बेरोजगारों, आप्रवासियों, युवाओं और महिलाओं के ऐसे किसी भी हित की पूर्ति इससे नहीं होती। उनका हित अपने देश के शासक वर्ग का विरोध करने और इस्लामी गणराज्य के खिलाफ संघर्षरत ईरानी जनता के साथ अन्तरराष्ट्रीयतावादी एकजुटता कायम करने में निहित है।

राष्ट्रपति खटामी की यात्रा का विरोध इसलिए होना चाहिए क्योंकि वह एक ऐसी शासन प्रणाली का मुखिया है जिसने अपनी जनता के प्रति सबसे भयानक किस्म के अपराध किये हैं। बीस साल पहले ईरान की जनता अपने अत्यन्त बुनियादी अधिकारों, मुक्ति और स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए उठ खड़ी हुई थी। उसने शाह के भ्रष्ट और दमनकारी शासन को उखाड़ फेंका था। शाह सरकार के पतन के बाद परिणामस्वरूप, जनता के बीच से सभी सामाजिक स्तरों और वर्गों के लोग अपने आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक मूल अधिकारों के संघर्ष को जारी रखने और भेदभाव, अन्याय और गरीबी से मुक्ति पाने के लिए संगठित होने लगे। फैक्टरियों में विभिन्न प्रकार की कामगार सभाएं, गांवों में किसानों के यूनियन और सभायें, स्त्री संगठन, लेखक संघ और छात्र यूनियन, चिकत्सालय और स्कूल काउंसिल हर जगह पैदा हो रहे थे। ईरान में दबी-कुचली राष्ट्रीयताओं — जैसे कुर्द और तुर्क मूल के लोगों ने समान अधिकारों के लिए संघर्ष छेड़ दिया था। परन्तु शाह शासन के खिलाफ हमारे लोगों के संघर्ष का फायदा उठाया अयातुल्लाह खुमैनी और उसके गुट ने, और ईरान के इस्लामी गणतंत्र का गठन इन लोगों ने किया। धार्मिक न्यायाधिकरण के सदस्यों का यह गिरोह स्वयं को जनपक्षधर और मुक्ति योद्धा के रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहा तथा पश्चिमी ताकतों की रजामन्दी से, जनता के पीठ पर सवार होकर सत्ता के केन्द्र में जा पहुँचा। ईरान के इन नये इस्लामी शासकों ने शाह की उस सिक्रेट पुलिस और फौज को तत्काल पुनर्गठित किया जिससे जनता इतनी नफरत करती थी और उस पर टूट पड़े। विशेषकर ऐसे लोगों पर, जो उन्हीं आदर्शों के लिए लड़ रहे थे, जिसकी खातिर ईरानी जनता ने शाह शासन से टक्कर ली थी। इस्लामी गणतंत्र के बीस वर्ष गरीबी से बदहाल जनता के अत्यन्त मूलभूत अधिकारों का योजनाबद्ध और बर्बर दमन का काल रहा है– इसमें विरोध की हर आवाज को कुचल दिया गया, दसियों हजार राजनीतिक विरोधियों को गिरफ्तार किया गया, उन्हें प्रताड़ित किया और मौत के घाट उतार दिया गया, स्त्रियों पर मध्य युगीन पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था लाद दी गयी।

स्त्रियों के सम्बन्ध में इस्लामी गणतंत्र का रिकार्ड

शाह की जगह शासन की बागडोर सम्हाले हुए अभी एक माह भी नहीं बीता था कि अयातुल्लाह खुमैनी ने स्त्रियों को हमले का निशाना बना कर अपने मजहबी निरंकुश शासन की शुरुआत की। उसने औरतों के लिए पर्दा अनिवार्य कर दिया। उसके बाद उनके निजी जीवन व सामाजिक सम्बन्धों को धर्मोपदेशों और धार्मिक मूल्यों से संचालित किया जाने लगा और इसने संवैधानिक कानून का दर्जा अख्तियार कर लिया। अपने अस्तित्व में आने के बाद से ही ईरानी इस्लामी गणतंत्र ने समूचे समाज पर अपनी पकड़ को मजबूत बनाने के लिए औरतों के खिलाफ राजनीतिक व विचारधारात्मक युद्ध छेड़ रखा है। उसने परम्परागत भूमिकाओं व रूढ़िवादी नैतिकता का शिकंजा उनके गर्दन पर कस दिया है और उन पर पुरुष आधिपत्य को गहरे और व्यापक रूप

से पैना कर दिया गया है। वे इसके लिए कड़े कदम उठा रहे हैं और बर्बर तरीकों का इस्तेमाल कर रहे हैं। परन्तु औरतें भी इस जोर जबर्दस्ती का लगातार विरोध करती रही हैं।

आर्थिक व सामाजिक रूप से स्त्रियों को लगभग दास जैसी स्थिति में रखा गया है। कानूनी नियम के मुताबिक स्त्रियां अपने पति की आधिकारिक इजाजत के बगैर विदेश यात्रा पर नहीं जा सकतीं वे इस कदर सामाजिक बन्धनों के अधीन हैं कि बिना पुरुष के साथ के वे एक शहर से दूसरे शहर में भी आ-जा नहीं सकतीं। पुरुषों को कानून से कुछ मिनटों में ही अपनी पत्नियों से एकतरफा तलाक लेने का हक हासिल है, वे चार पत्नियां और अपनी इच्छानुसार जितनी रखैलें चाहें रख सकते हैं, जबकि तलाकशुदा स्त्री को अपना बच्चा अपने पास रखने का हक नहीं है; 9 साल की उम्र में भी बच्चियों का निकाह पिता की रजामन्दी से किया जा सकता है। ईरान के इस्लामी गणतंत्र का कानून यह कहता है कि यदि लड़कियों का विवाह 9 साल से कम उम्र में हुआ है तो पति उसके साथ बलात्कार नहीं कर सकता लेकिन उंगलियों से उसका कौमार्य भंग करने की उसे इजाजत है। यदि कोई विवाहित स्त्री किसी पुरुष के साथ परस्पर सहमति से दैहिक सम्बन्ध कायम करती है तो कानूनन पत्थर मार-मार कर उसकी जान ली जा सकती है उथवा उसके पुरुष सम्बंधियों को कानूनी हक है कि परिवार की 'इज्जत' बचाने के लिए वे उसे जान से मार डालें। यह कानून है उस देश का, श्रीमान खटामी जिसके रखवाले हैं और जिसे अक्षरशः लागू करने का दम्भ भरते हैं।

स्त्रियों को अपने अंगूठे तले रखने के उद्देश्य से इस्लामी गणतंत्र के सरकारी अधिकारियों ने सार्वजनिक रूप से उनके आचार-व्यवहार पर निगरानी रखने के लिए कानूनों का पालन करवाने वाले नाना प्रकार के पुलिस बलों को गठित किया है– लैंगिक व्यवहार पर निगरानी रखने वाली पुलिस, पहनावे पर निगरानी रखने वाली पुलिस इत्यादि।

बन्दीगृह और महिला राजनीतिक बन्दी

इस्लामी गणतंत्र के जघन्यतम अपराधों में से एक दस वर्ष पूर्व किया गया था, जब सात दिनों के भीतर सैकड़ों-हजारों राजनीतिक कैदियों को मौत के घाट उतार दिया गया था। इसमें एक बड़ा हिस्सा औरतों का था। वे इस्लामी शासन के खिलाफ अपने विरोध की आवाज बुलन्द कर रही थीं और उन्हें कत्ल कर दिया गया। अपने सिद्धान्तों पर हमेशा मजबूती से डटे रहने की उनकी परम्परा ईरान की पुरुज्जीवित स्त्री आन्दोलन के लिए अमूल्य है। इनमें से गिरफ्तार अधिकांश स्त्रियां किशोर वय की थीं। ये स्त्रियां और बहुतेरी अन्य, जो इस्लामी गणतंत्र की काल कोठरी से बच निकली थीं, औरतों की परम्परागत भूमिका के विरुद्ध बगावत का झण्डा बुलन्द कर रही हैं, उन्होंने आर्थिक अभाव और सामाजिक अन्याय, जिसे हमारी बहुसंख्यक जनता पर लाद दिया गया है, को चुनौती दी है, रूढ़िवादी और सड़े-गले विचारों के खिलाफ वे संघर्ष में कूद पड़ी हैं। स्त्रियों से घृणा करने वाले इस्लामी गणतंत्र के ख़िलाफ उन्होंने राजनीतिक जंग छेड़ने की हिम्मत दिखाई। वे फैक्टरियों में लड़ रही थीं, विश्वविद्यालयों और विद्यालयों में लड़ रही थीं, सांस्कृतिक क्षेत्र में लड़ रही थीं, कुर्दिस्तान में संघर्षरत थीं और अन्त में, कारावास में लड़ रही थीं।

और बदले में जेल अधिकारी उनपर दुगुनी बर्बरता से टूट रहे थे। एक तो इसलिए कि उन्होंने राज्य के खिलाफ बगावत करने की जुर्रत की थी और इसलिए भी कि औरत होकर भी उन्होंने ऐसा करने की हिम्मत की। उन्हें तोड़ने और उनका आत्म सम्मान कुचल डालने के उद्देश्य से जेल अधिकारियों द्वारा उन्हें भीषण यातनायें दी गईं, उनसे बलात्कार किया गया, रजोधर्म के दौरान साफ-सफाई की सुविधाओं से उन्हें वंचित किया गया, ब्लेड से उनके स्तनों को चीर दिया गया आदि, आदि। इस्लामी कानून के अनुसार कुमारियों को मौत की सजा नहीं दी जा सकती इसलिए हाईस्कूल की कम उम्र छात्राओं के साथ ये आतताई उन्हें मौत के घाट उतारने के पहले बलात्कार करते थे।

जिस समय इन वीभत्स अपराधों को अंजाम दिया जा रहा था, श्रीमान राष्ट्रपति खटामी इस शासन व्यवस्था के एक मंत्री थें–इस्लामी संस्कृति और संदर्शक मंत्री ! ...

आप किसकी ओर हैं

पश्चिमी यूरोपीय शक्तियां, मानवाधिकार हनन के खिलाफ अपने अनेकानेक अन्तरराष्ट्रीय और यूरोपीय कानूनों की डींग हांकते हैं। परन्तु इन पूंजीपतियों के हाथ में इससे भी बड़ा एक कानून है – मुनाफा, और मुनाफा कमाने का कानून। इस कानून के अन्तर्गत ये ताकतें एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में ईरान के इस्लामी गणतंत्र जैसे जनविरोधी और स्त्री से नफरत करने वाले शासन से प्रेम जताते हैं, उसे ताकतवर बनाते हैं और उसकी रक्षा करते हैं।

हम इन तमाम देशों की जनता तक अपनी आवाज पहुँचाना चाहते हैं – विशेष कर उन लोगों तक जो खुद भी अपने-अपने देशों में अनेकानेक प्रकार के सामाजिक उत्पीड़न और शोषण के खिलाफ जंग लड़ रहे हैं – इस सघर्ष में हमारे साथ एकजुट हो जाइये। हम विशेष रूप से जर्मनी, फ्रांस, इटली और अन्य यूरोपीय देशों की औरतों का आह्वान करते हैं कि ईरान की महिलाओं के सघर्षों के साथ एकजुटता का प्रदर्शन कीजिये। राष्ट्रपति खटामी की इटली, फ्रांस, जर्मनी की यात्राओं का पूरी ताकत के साथ विरोध कीजिए और आयोजित किये जाने वाले विरोध मार्च और अन्य कार्रवाईयों में भागीदारी कीजिए।

ईरान में स्त्रियां इस्लामी गणतंत्र की समस्त पाशविकता के खिलाफ जंग कर रही हैं। आइये कटखने कुत्तों के इस पृथ्वी ग्रह पर हम स्त्रियों की दासी और अर्द्धदासी जैसी हैसियत के खिलाफ एकजुट हो जायें और एक ऐसे विश्व के लिए संघर्ष करें जहां दूसरों की कीमत पर जिन्दा रहने की कोशिश कोई भी नहीं करता।

'रिवोल्यूशनरी वर्कर' से साभार.

अनुवाद : मीनाक्षी